सद्गुरू किरपा फेरिया, मन का ओर ही रूप
कबीर पांचौ पलटिया, भैल किया अनूप

अनुवाद :

सद्गुरू की कृपा से मन की गति और की और हो जाती है, मन ही नही किन्तु पांचों इन्द्रिंया भी सहायक हो जाती हैं और अनुष अलख लखने में आ जाता है।

दृष्टांत :

एक बार एक व्यक्ति महान संत एकनाथ जी के पास गया और उनसे पूछा 'महाराज' क्या मेरा जीवन आपके जीवन की तरह निष्पाय और पवित्र हो सकता है यदि हो सकता है तो कैसे और नही हो सकता तो क्यों? एकनाथ जी ने कहा, तुम्हारे प्रशन का उत्तर फिर कभी देंगे परंतु यह क्या, तुम्हारी ललाट की रेखाओं के अनुसार तो एक सप्ताह बाद तुम्हारी मृत्यु का योग है! यह सुनकर वह व्यक्ति सन्न रह गया। मृत्यु का भय उसपर इस कदर चढ़ा कि वह खाना पीना व अपना कारोबार आदि सब छोड़ छाड़ कर एक कमरे में चुपचाप बैठ गया और खुद पर मंडरा रही मृत्यु का एक एक पल गिनने लगा।

उसका सारा जीवन स्वार्थ सिद्धि के लिए छल कपट कर पैसा जुटाने में बीत गया उसने निश्चय किया कि कम से कम इस बचे खुचे समय में ऐसा कुछ ना किया जायें जिससे लोगों को कष्ट हो और उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचे! वह अपने पापों की क्षमा मांगते हुए नित्य भगवान का भजन करने लगा और वहा से गुजरने वालौ (गरीबों) को धन व वस्त्रों का दान करने लगा। सातवें दिन संत एकनाथ जी ने उससे पूछा इन दिनों तुमने कैसे समय बिताया और क्या क्या पाप किये? उसने कहा आप पाप की बात करते है, मुझे तो हर पल मृत्यु ही दिखाई देती रही है। हर पल भगवान याद आते रहे। कोशिश कि किसीको कोई कष्ट ना हो। संत एकनाथ जी मुस्कुराते हुए बोले बस यह तुम्हारे उस दिन के प्रश्न का उत्तर है। जो लोग मृत्यु को याद रखते है और समझ लेते है कि यह कभी भी कही भी आ सकती है। वह पाप कर्मो से बचकर परमात्मा के निकट बने रहते है।

मृत्यु जीवन का अनिवार्य स्वभाविक है इस वास्तविकता को हमें अपने मन में स्थापित कर लेना चाहिये। महाभारत काल में यक्ष ने युधिष्टिर से अपने प्रश्नो में एक बात यह भी पूछी थी कि संसार में सबसे बडा आश्चर्य क्या है। युधिष्टिर का अविस्मरणीय उत्तर था की सबसे बडा आश्चर्य यह है कि हम प्रतिदिन देख रहे है। कि लोग निश्चित रूप से मृत्यु को प्राप्त हो रहे है फिर भी एसा व्यवहार कर रहे है कि जाने वाले तो चले गये पर हम नही जायेंगे। हम ने तो हमेशा के लिए पट्टा लिखा कर लायें है धर्म की इस भ्रम स्थिति से बाहर आकर मृत्यु के सत्य के प्रति अश्वस्त हो मृत्यु परमात्मा का उतना ही मंगलकारी वरदान है जितना जन्म। यह सोच हमें पाप कर्मो से बचने की चेतावनी देती है।

और मनमानी करने पर अकुंश लगाती है मृत्यु का अहसास हमें अपने कर्तव्य ओर दायित्वों को स्थगित ना कर उन्हे जल्दी जल्दी निपटाने के लिए प्रेरित करती रहती है। यदि अपने दायित्व भलि प्रकार के पूरे कर लेते है तो प्राण पखेरू सहजता से अपना स्थान छोड देते है।

संकलन वेद प्रकाश चुघ